अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ

THE CONTEMPORARY MILIEU AND THE TRENDS IN THE FICTION OF AKHILESH

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर को

हिन्दी साहित्य में पी-एच.डी. उपाधि के पंजीकरण

हेतु प्रस्तुत संशोधित रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) सुमन पलासिया

(सहायक आचार्य–हिन्दी विभाग)

माणिक्य लाल वर्मा

राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा(राज.)

शोधार्थी

पवन कुमार गर्ग

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर (राजस्थान)

सत्र–2017

FORMAT FOR OUTLINE(SYNOPSIS) OF PROPOSED RESEARCH WORK

1. Name of the scholar : In English : **PAVAN KUMAR GARG**

In Hindi : पवन कुमार गर्ग

2. Title of the Research Work :–

In English : **THE CONTEMPORARY MILIEU AND THE TRENDS IN THE FICTION OF AKHILESH**

In Hindi : अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ

3. Location (Institution/Department) Where the work is to be done : हिन्दी विभाग माणिक्य लाल वर्मा, राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

4.परिचय, प्रस्तावित शोध का महत्त्व, उद्देश्य (Introduction, Importance of the proposed Investigation, Objectives)

परिचय (Introduction)

कहानी अपने संक्षिप्त रूप, विस्तृत आयाम और सटीक संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के कारण हिन्दी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। समकालीन कहानीकारों में अखिलेश अपनी कहानियों के कथ्य, शिल्प व रचनात्मक विविधता के कारण महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर माने जाते हैं । वह समकालीन परिवेश में व्याप्त तात्कालिक समस्याओं को कहानी के केन्द्र में रखकर भाषा व संवेदना का ऐसा भाषिक इन्द्रजाल बुनते हैं कि पाठक हतप्रभ रह जाता है। वे सन् 1977 से निरन्तर साहित्य सृजन कर रहे हैं। उनके व्यक्तित्व की एक और पहचान 'तद्भव' जैसी साहित्यिक पत्रिका का सम्पादन से भी है।

अखिलेश के रचनाकर्म में 'आदमी नहीं टूटता' नाम से उनकी प्रथम रचना कहानी के रूप में 1977 में निष्कर्ष–5 पत्रिका में प्रकाशित हुई। इसके बाद उनकी कहानियाँ निरंतर पत्र–पत्रिकाओं में छपती रही। उनके अभी तक चार कहानी संग्रह और दो उपन्यास प्रकाशित हुए हैं। अखिलेश का प्रथम कहानी संग्रह 1983 में 'आदमी नहीं टूटता' नाम से प्रकाशित हुआ, दूसरा कहानी संग्रह 'मुक्ति'(1989), तीसरा कहानी संग्रह 'शापग्रस्त'(1997) और चौथा कहानी

संग्रह 'अँधेरा' (2006) नाम से प्रकाशित हुआ। इन कहानी संग्रहों के अलावा अखिलेश के दो उपन्यास 'अन्वेषण' (1992), और 'निर्वासन' (2014) भी प्रकाशित हो चुके हैं।

अखिलेश का कथा साहित्य आपातकाल से लेकर भूमंडलीकरण, सांप्रदायिक दंगों और उत्तर आधुनिकता के कथा आन्दोलनों के बीच विकसित हुआ है। इन सभी कहानियों में तत्कालीन परिवेश की गहरी छाप दिखाई देती है। 'सोने का चाकू', 'हाकिम कथा', 'घाल–मेल', 'मुहब्बत', 'मुक्ति', 'हनीमून', 'ऊसर', 'चिट्ठी' इत्यादि उनकी नब्बे के दशक में प्रकाशित प्रसिद्ध कहानियाँ हैं, जिनमें पारिवारिक बदलते रिश्ते, राजनीतिक उठापटक, सामाजिक पतन इत्यादि के यथार्थ चित्र दिखाई पड़ते हैं। नब्बे के दशक के बाद से लेकर अभी तक प्रकाशित कहानियों में 'बायोडाटा', 'शापग्रस्त', 'जलडमरूमध्य', 'यक्षगान', 'ग्रहण', 'वजूद', 'अँधेरा', 'शृँखला' इत्यादि में भ्रष्टाचार, राजनीतिक–संघर्ष,दलित–विमर्श, स्त्री–विमर्श का गहन चित्रण नजर आता है।

अखिलेश के कथा साहित्य की शैली पर्यवेक्षण एवं किस्सागोई की तरह है और अखिलेश अपने आस–पास में घटित घटनाओं को बारीकी के साथ अपने साहित्य में सम्मिलित कर लेते हैं। इनकी कहानियों में एक किस्म की खिन्नता, उदासी व अवसाद की स्थिति हमेशा उपस्थित रहती है, लेकिन कुछ अन्तराल पर एक ठिठोली इस अवसाद की स्थिति को तोड़ने का कार्य करती है। उनकी आरम्भिक कहानियों मे पायी जाने वाली विचित्रता, उनकी कहानी कला के विकास के साथ–साथ ही धीरे–धीरे विडम्बना में बदल जाती है।

'अन्वेषण' उपन्यास में युवा के मानसिक विक्षोभ स्त्री संबंधी दृष्टिकोण का बेबाक चित्रण होता है। 'निर्वासन' उपन्यास में आत्मनिर्वासन, सांप्रदायिकता, जातिवाद, आपातकाल के बिम्ब, पीढ़ी–अंतराल दिखाई देता है।

शोध कार्य का महत्त्व (Importance of Proposed Research Work)

अखिलेश के लेखन में समकालीन जीवन की समस्याएँ अधिक उभरती हैं। आपातकाल से लेकर नब्बे के दशक का भूमंडलीकरण, शासनतन्त्र की अस्थिरता, जातिगत व साम्प्रदायिक दंगे, बेरोजगारी और गरीबी इत्यादि उनके साहित्य की गहराई से दृश्यमान होते हैं। अखिलेश वर्तमान भारत के उस क्षेत्र या कस्बे को अपने कथा साहित्य का विषय बनाते है, जहाँ आदमी

आधुनिक होने को तत्पर तो है, पर अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को त्यागने का साहस भी नहीं कर पाता है। इनकी कहानियाँ जाने–अनजाने नये को स्वीकार करने की चाहत और अतीत का मोह नहीं छोड़ पाने की उधेड़बुन को उद्‌घाटित करने का कार्य करती हैं। कहानी संग्रह या उपन्यास सभी में इसकी गहन अनुभूति महसूस की जा सकती है।

अखिलेश के कथा साहित्य में राजनीतिक उठापटक, भ्रष्टाचार, दलित व स्त्री विमर्श के साथ साम्प्रदायिक संघर्ष के सामने कोई कथा नायक खड़ा तो होता है, लेकिन वह अपना विद्रोह ही रख पाता है। उन परिस्थितियों से निकल नहीं पाता है; उसका त्रासदी में घिरे होना और उससे बाहर नहीं निकल पाना पाठक को बहुत खलता है। कथाकार अपना उद्देश्य पूर्ण करता है कि वह पाठक को उसके यथार्थ से रूबरू करा पाने में सफल हो जाता है। यह वह यथार्थ है, जिसे अखिलेश समकालीन परिवेश से सहज रूप प्राप्त करते हैं एवं समकालीन परिवेश और उसके यथार्थ रूप को उभारने में सफल होते हैं।

अखिलेश के कथा साहित्य को दो समय अंतराल में बाँटकर विश्लेषित किया जा सकता है, प्रथम भाग नब्बे के दशक का कथा साहित्य तथा द्वितीय भाग नब्बे के दशक के बाद का कथा साहित्य है।

नब्बे के दशक के कथा साहित्य में 'आदमी नहीं टूटता'(1977), 'कुचक्र'(1978), 'अभिमन्यु की हत्या'(1980), 'सैनिक लोग'(1982), 'अदावत', 'सोने का चाकू'(1983), 'मुहब्बत'(1986), 'हाकिम कथा', 'मुक्ति'(1986), 'घाल–मेल', 'हनीमून', 'ऊसर'(1989), व 'चिट्‌ठी'(1989) जैसी कहानियों को रखा जा सकता है।

इस दौर की कहानियों में अखिलेश के लेखन का प्रारम्भिक रूप देखा जा सकता है। 'आदमी नहीं टूटता'(1977), से एक कहानीकार के रूप में प्रारम्भ हुई अखिलेश की यह कहानी यात्रा 'चिट्‌ठी'(1989) जैसी कहानी पर समाप्त होती है, जिसे युवाओं की बेरोजगारी जैसी समस्या पर लिखी गई महत्त्वपूर्ण कहानी माना जाता ह। इस कहानी में समकालीन परिवेश के अनेक बिम्ब सुन्दर ढंग से विकसित हुए हैं। समाज की बदलती हुई सोच, स्वार्थ लोलुपता को भी इस कहानी में गहराई के साथ दर्शाया गया है। इस कहानी में केवल बेरोजगारी का चित्रण ही नहीं मिलता बल्कि बेरोजगारी से आगे युवाओं के समाज के प्रति दृष्टिकोण को भी समझने में सहायता मिलती है।

इस दौर की अन्य कहानियों में 'अभिमन्यु की आत्महत्या' में प्रेम के बदलते रूप को दिखाया गया है। मुस्लिम पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी 'सोने का चाकू' में सामंतवाद का ढहना केन्द्र में है। "हाकिम कथा और घाल–मेल यह दो ऐसी कहानियाँ है जो लेखक के सन्दर्भ में एक नई रचनात्मक शुरूआत का पता देती हैं। यहाँ मध्यवर्ग और उसकी अनैतिक लिप्साएँ लेखक की रचनात्मक चिन्ताओं के केन्द्र में हैं। दरअसल यह ऐसे चरित्रों की कहानियाँ है, जो निम्न वर्ग से मध्य वर्ग और मध्य वर्ग से उच्च मध्य वर्ग में छलांग लगाने की प्रक्रिया में हैं। यह मुकम्मल नाउम्मदी की कहानियाँ है।"

हाकिम 'कथा' कहानी में भूमंडलीकरण और उदारवाद के प्रभाव के कारण पारिवारिक संबंधों के बिगड़ाव और बढ़ती स्वार्थ प्रवृत्तिओं का चित्रण हुआ है। 'मुहब्बत' कहानी में समाज की बुनावट के मध्य उत्पन्न होने वाले किशोरोचित्त लैंगिक आकर्षण की सहज कॉमिक और विडंबनात्मक प्रस्तुति है। इस कहानी में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि जिस परिवेश में हम हैं उसमें कब यह कहानी त्रासदी में बदल जाएगी? 'ऊसर' कहानी में राजनीति में व्याप्त अवसरवाद भ्रष्टता का चित्रण किया हुआ है।

1990 के दशक के बाद से अभी तक की कहानियों में परिवेश और प्रवृत्तियाँ बदलते रूप के साथ विकसित हुई हैं। इन कहानियों में भूमंडलीकरण से बढ़ता स्वार्थ, बदलते सामाजिक पारिवारिक रिश्ते, सांप्रदायिक–संघर्ष और स्त्री व दलित विमर्श की अनुगूँज बड़ी गहराई व सूक्ष्मता के साथ सुनाई पड़ती है। 'बायोडाटा' कहानी में युवाओं का राजनीति के प्रति आकर्षण और उसके विपरीत परिणाम भी दिखाए गए हैं। इसमें सहानुभूति का दिखावटी रूप दिया गया है। इस कहानी के माध्यम से अखिलेश वर्तमान भारत के राजनीतिक विद्रूपों का बारीक अंकन करते हैं।

'शापग्रस्त' कहानी का युवा सुखी अनुभव नहीं करता है। वह अपने आप से अप्रसन्न होकर सुखी होने के लिए तरह–तरह के पैतरें अपनाता है, लेकिन उन सब में सफल नहीं हो पाता है। इस कहानी में समाज, शासन व परिवार इत्यादि के दिखावटी रूप पर व्यंग्यात्मक चित्रण हुआ है। 'अगली शताब्दी के प्यार के रिहर्सल' कहानी में आपसी स्वार्थ व अवसरवाद दिखाई पड़ता है। 'जलडमरूमध्य' कहानी में पात्र उदारीकरण व भूमंडलीकरण की आधी में बहकर सामाजिक जीवन एवं पारिवारिक जीवन को असुरक्षित बना देते हैं। 'वजूद' कहानी सवर्ण

वर्चस्ववाद के विरूद्ध उत्पीड़ित जनता के वजूद का साक्ष्य है। 'ग्रहण' कहानी में दलित आन्दोलनों की आहट सुनाई देती है और इसमें दलित अपनी राह ढ़ूंढने व उसे अमल में लाने की तैयारी करता प्रतीत होता है। इन गुप्त आन्दोलनों और सुप्त युवा चेतना के प्रचार प्रसार में नक्सलवाद की पद चाल को सुना जा सकता है । 'वजूद' व 'ग्रहण' जैसी कहानियों में सामाजिक संरचना में जातिगत भेदभाव को आज की बड़ी सच्चाई के रूप में दिखाया जाता है।

'यक्षगान' कहानी में सरोज नामक बलात्कार पीड़ित युवती का चित्रण किया गया है, जो न्याय के लिए राजनीतिक स्वार्थ में फँस कर रह जाती है । राजनीति ही पुलिस व मीडिया की भूमिका तय करती है । ऐसा लगता है कि राजनीति को गुमराह करना मीडिया का एक मात्र उद्धेश्य रह गया है और पुलिस केवल अपराधियों की रक्षक हो गयी है। समाज में कितनी निर्दयता है, कहानीकार इसे दिखाने में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। कहानी समाज पर प्रश्न उठाती है कि न्याय पाना कितना कठिन है । 'अँधेरा' कहानी में साम्प्रदायिक दंगों का यथार्थ रूप दिखाया गया है। 'शृंखला' कहानी का युवा सत्ता से लड़ता है व सत्ता उसे बदनाम करके उसके प्रति जनता की विश्वसनीयता को खंडित कर देती है। इसके बाद उसे उसके अंजाम तक पहुँचा दिया जाता है। अन्ना हजारे के आंदोलन के पूर्व लिखी गई इस कहानी में इस आंदोलन को झलक दिखाई पड़ती है। इस आधार पर अखिलेश का लेखन भविष्य में भी झाँक आता है।

'अन्वेषण' उपन्यास में उम्मीद ना उम्मीद के छोरों के बीच युवा के मानसिक विक्षोभों का बड़ी शिद्दत से अन्वेषण किया गया है। यह अन्वेषण युवाओं के साथ जनांदालनों के बिखराव, जनविह्वल आवेग का भी हैं, साथ ही अँधेर समय में निराश होने के खिलाफ उम्मीदों का भी हैं।

'निर्वासन' उपन्यास में युवा संघर्ष केवल अपना संघर्ष ही नहीं दिखाता वह खोज भी करता है, अपने से अधिक मानवता की। इस उपन्यास में जातिवाद, सांप्रदायिकता, आपातकाल, पीढ़ी अंतराल इत्यादि को एक साथ बिम्बों के रूप में सजाया गया हैं।

इस प्रकार अखिलेश का कथा साहित्य समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों को गहराई से अंकित करता है और पाठक के तौर पर यथार्थ के गंभीर विश्लेषण की माँग खड़ी कर देता है। अखिलेश के कथा साहित्य मे समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों का आकलन और विश्लेषण कर हम अखिलेश के रचनाकर्म का मूल्यांकन कर सकेंगे। साथ ही अखिलेश के रचना कर्म को समझ सकेंगे। अखिलेश के कथा साहित्य का परिवेश और प्रवृत्तियों के सन्दर्भ में किया गया यह अध्ययन समकालीन यथार्थ को समझने में महत्त्वपूर्ण साबित होगा। रचनाकार वही बड़ा होता है,

जो अपने समय को चुनौतियों से मुँह नहीं मोड़ता बल्कि सामना करता है। समकालीन परिस्थितियों से जूझना ही लेखक की रचनाशीलता में धार पैदा करता है। आधुनिक समाज व समय को समझने की दृष्टि से अखिलेश के कथा साहित्य आवश्यक बन पड़ता है।

प्रस्तावित शोध कार्य के प्रमुख उद्देश्य (Main objective of the research work)

1 समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों को समझाते हुए अखिलेश के कथा साहित्य पर प्रकाश डालना।

2 समकालीन परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए अखिलेश के रचनाकर्म के महत्त्व को स्थापित करना।

3 अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों को उभारकर समकालोन साहित्य में अखिलेश का स्थान निर्धारित करना।

4 अखिलेश के कथा साहित्य में युवा स्वप्न और संघर्ष संदर्भ में उत्तर आधुनिकता के प्रभाव को समझाना।

5 अखिलेश के कथा साहित्य में आये विभिन्न विमर्शों की पहचान उनकी आवश्यकता और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालना।

5. प्रस्तावित शोध के विषय पर पूर्व में किए गए कायो की समीक्षा (**Review of work already done on the subject of proposed Research Study)**

समीक्षा से तात्पर्य यह है कि किसी वस्तु या विचार का विभिन्न तर्क और सिद्धान्तों के माध्यम से विश्लेषण और विवेचन करना है। साहित्य के क्षेत्र में समीक्षा, विचार और भावों का निचोड है। शोध को गति प्रदान करने के लिए साहित्य के शोध की समीक्षा अनिवार्य होती है।

अखिलेश के कथा साहित्य पर समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ शोध का नवीन विषय है। अखिलेश के साहित्य के किसी एक या सीमित पक्ष पर ही शोध हो पाये है जो अधिकांश लघु शोध ही हैं। प्रस्तुत विषय शोध की दृष्टि से नवीन है। साथ ही अखिलेश के कथा साहित्य के प्रत्येक पहलूओं को छूता है और उसका सार निकालने में सक्षम है। अतः अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ विषय पर शोध कार्य किया जाना अपेक्षित है।

6. शोध के प्रस्तावित क्षेत्र में शोध रिक्तता की पहचान (Research gaps identified in the proposed field of investigation - Based on the review)

प्रस्तावित विषय पर अभी तक सम्पूर्ण व विस्तृत रूप से शोध नहीं हुआ है, लेकिन अखिलेश के कथा साहित्य पर कई लघु शोध हुए हैं, जो केवल कुछ कहानियों या उनके उपन्यास तक ही सीमित है। जैसे 'शापग्रस्त' कहानी पर लघु शोध हुआ है। दिल्ली विश्वविद्यालय में 'अखिलेश की कहानियों का यथार्थ बोध' पर रवि रंजन ने लघु शोध किया है, जो अखिलेश की कहानियों का यथार्थ बोध ही रख पाता है।

संभावना पत्रिका चित्तौडगढ़ द्वारा राष्ट्रीय सेमीनार 'समकालीन परिदृश्य और अखिलेश का साहित्य', 3–4 अक्टूबर, 2015 को करवाया गया। जिसमें राजीव कुमार ने 'नब्बे के दशक की हिन्दी कहानी और अखिलेश' एवं डॉ. रेणु व्यास ने 'मानवतावाद और साहित्य' पर शोधपत्र पढ। अखिलेश के कथा साहित्य के सम्पूर्ण पहलुओं को ये शोधपत्र व अन्य शोध छूने में असमर्थ रहे हं।

'अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ' नामक विषय उनके सम्पूर्ण कथा साहित्य के आधार रूप को समेटे हुए है। अतः शोध की दृष्टि से यह विषय नवीन एवं महत्त्वपूर्ण है जिस पर शोध होना आवश्यक है। यह एक शोध की नई उपलब्धि होगा।

7. मुख्य परिकल्पना (Major Hypothesis, if any)

समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ प्रत्येक साहित्य को प्रभावित करती हैं। अखिलेश का कथा साहित्य आपातकाल से लेकर वर्तमान की दशा–दिशा को व्यक्त करता है। आपातकाल की स्थिति, उदारीकरण व भूमंडलीकरण की स्थिति, बाबरी मस्जिद विध्वंस, गुजरात दंगे, अन्ना हजारे आन्दोलन और दलित व स्त्री विमर्श सम्बधी विचार धारा को एक माला के रूप में व्यक्त करने के बाद उस यथार्थ का परिचय अखिलेश के साहित्य में बहुत ही सहजता के साथ दिखाई पड़ता है। अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ इस परिकल्पना को पूर्ण करती हैं।

8. शोध पद्धति (Research Methdology)

प्रस्तावित शोध समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों के आधार पर साहित्य के स्वरूप और उत्तरदायित्व को निर्धारित करेगा। इसलिए परिवेश और प्रवृत्तियों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानात्मक, वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग अपेक्षित है । समकालीन परिवेश (राजनीतिक परिवेश,

सामाजिक परिवेश, आर्थिक परिवेश, धार्मिक परिवेश, सांस्कृतिक परिवेश इत्यादि) और प्रवृत्तियों (उत्तर आधुनिकता , भूमंडलीकरण, बाजारवाद, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श इत्यादि) पर बात करने के लिए हमें मनोवैज्ञानिक समझ और द्वद्वात्मक पद्धति का प्रयोग जरूरी होगा। समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों का साहित्य पर प्रभाव व साहित्य का समाज पर प्रभाव को व्याख्यायित करने के लिए तुलनात्मक पद्धति अपेक्षित होगी।

9. प्रस्तावित शोध प्रबंध की अध्याय योजना (Tentative chapter scheme)

शोध कार्य के सुसंगत, व्यवस्थित और वैज्ञानिक संपादन के लिए समूचे शोध कार्य का तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक वर्गीकरण व अध्यायवार विभाजन अनिवार्य प्रक्रिया है। शोध विषय का अध्यायीकरण जितना सुस्पष्ट व सरल होगा उतना ही शोध का कार्य सुचारू-सुविधापूर्ण व व्यवस्थित होगा। प्रस्तुत शोध कार्य का संभावित अध्यायीकरण निम्नवत् है :-

प्रथम अध्याय - समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ

1.1 समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों से अभिप्राय व स्वरूप

1.1.1 समकालीन का अर्थ और उसका काल निर्धारण-

1.1.2 परिवेश का स्वरूप और प्रकार-

1.1.3 प्रवृत्ति से अभिप्राय-

1.2 समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियों का हिंदी साहित्य पर प्रभाव-

1.2.1 आदिकाल में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ-

1.2.1.1 आदिकाल में समकालीन परिवेश-

1.2.1.2 आदिकाल में समकालीन परिवेश से उत्पन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-

1.2.2 भक्तिकाल में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ-

1.2.2.1 भक्तिकाल में समकालीन परिवेश

1.2.2.2भक्तिकाल में समकालीन परिवेश से उत्पन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-

1.2.3 रीतिकाल में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ-

1.2.3.1 रीतिकाल में समकालीन परिवेश-

1.2.3.2 रीति-काल में समकालीन परिवेश से उत्पन्न साहित्यिक प्रवृत्तियाँ-

1.2.4 आधुनिक-काल में समकालीन परिवेश और प्रवृत्तियाँ-

1.2.4.1. आधुनिक-काल में समकालीन परिवेश-

1.2.4.2. आधुनिक काल में समकालीन परिवेश से उत्पन्न पद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ–

1.2.4.3 आधुनिक काल में समकालीन परिवेश से उत्पन्न गद्य साहित्य की प्रवृत्तियाँ-

द्वितीय अध्याय - अखिलेश का व्यक्तित्व एवं रचना कर्म

2.1 अखिलेश का जीवन परिचय

2.2 अखिलेश का रचनाकर्म

2.2.1 कहानी साहित्य

2.2.2 उपन्यास साहित्य

2.2.3 अखिलेश का अन्य साहित्यिक विधाओं में लेखन और संपादन

तीसरा अध्याय – अखिलेश के कथा साहित्य में समकालीन परिवेश

3.1 अखिलेश के कहानी साहित्य में समकालीन परिवेश-

3.1.1 राजनीतिक परिवेश

3.1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश

3.1.3 आर्थिक परिवेश

3.1.4 धार्मिक परिवेश

3.2 अखिलेश के उपन्यास साहित्य में समकालीन परिवेश-

3.1.1 राजनीतिक परिवेश

3.1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश

3.1.3 आर्थिक परिवेश

3.1.4 धार्मिक परिवेश

चतुर्थ अध्याय - अखिलेश के कथा साहित्य में प्रवृत्तियाँ

4.1 कथ्यगत प्रवृत्तियाँ

4.1.1 दलित विमर्श

4.12 स्त्री विमर्श

4.1.3 राजनीतिक विमर्श

4.1.4 बाजारवाद व भूमंडलीकरण और अन्य प्रवृत्तियाँ

4.2 शिल्पगत प्रवृत्तियाँ

4.2.1 लम्बी कहानी

4.2.2 बौद्धिक पाठ

4.2.3 कॉमिक ट्रजेडी

4.2.4 विखंडनवाद

पंचम अध्याय - अखिलेश के कथा साहित्य में युवा स्वप्न और संघर्ष संदर्भ व उत्तर आधुनिकता

5.1 युववर्ग की आकांक्षा, उपेक्षा और असंतोष (युवा के स्वप्न और यथार्थ)

5.2 युववर्ग और समकालीन बोध

5.3 अखिलेश के कथा साहित्य में उत्तर आधुनिकता

षष्ठ अध्याय - अखिलेश के कथा साहित्य में परिवेश और प्रवृत्तियों की उपस्थिति का समग्र मूल्यांकन

उपसंहार

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 आधार ग्रंथ

2 सहायक ग्रंथ

3 शब्दकोश

4 पत्र - पत्रिकाएँ

5 ऑनलाइन पोर्टल

10. संदर्भ सूची (संलग्न) (List of references cited)

आधार ग्रंथ : कहानी-संग्रह

1. *आदमी नहीं टूटता* - श्रवण प्रकाशन मन्दिर , इलाहाबाद , प्रथम संस्करण- 1983
2. *मुक्ति* – वाणी प्रकाशन नई दिल्ली प्रथम संस्करण - 1989
3. *शापग्रस्त* राधाकृष्ण प्रकाशन , नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1997
4. *अँधेरा* - राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , प्रथम संस्करण - 2006

विभिन्न पत्र - पत्रिकाओं में प्रकाशित अखिलेश की कहानियाँ -

1. *कुचक्र- सारिका,* 16-30 नवम्बर 1978 सं. कन्हैयालाल नन्दन।
2. *कोहरा और धरती- प्रारूप,* 1 सं . राजेन्द्र मेहरोत्रा।
3. *सैनिक लोग-सारिका,* जुलाई, 1982 सं. अवध नारायण मुद्गल।
4. *अभिमन्यु की हत्या- सारिका,* 16-30 सितम्बर, 1980 सं. कन्हैयालाल नन्दन
5. *बादल छंटने से धूप तक- समवेत* - 4, 1980 सं. प्रमोद बेड़िया।
6. *सेठ, मन्त्री, देवी और श्यामलाल- समकालीन साहित्य स्वरूप और संभावनाएँ,* 1980 सं. अखिलेश

7. *पिंजड़े में खुशबू- अभिप्राय-* 2 अप्रैल, 1982 सं. राजेन्द्र कुमार।
8. *सोने का चाकू- सारिका,* 1-15 अप्रैल, 1983 सं. अवध नारायण मुद्गल।
9. *हाकिम कथा- साक्षात्कार,* संपादक सोमदत्त।
10. *घालमेल- उद्भावना,* सं. अजय कुमार।
11. *मुहब्बत- अभिप्राय* - 11 अप्रैल, 1986 सं. राजेन्द्र कुमार।
12. *अचानक नई पहल* 30 जुलाई, 1986 सं. ज्ञान रंजन।
13. *बच्चा कैसे बढ़ेगा- सारिका* 16-30 जुलाई 1986 सं अवध मुद्गल।
14. *बडी अम्मा- नया पथ* -4 सितम्बर , 1987 सं . चंचल चौहान।
15. *हनीमून- परिवेश* – 11 सं . मूलचन्द गौतम कुमार संभव।
16. *ऊसर- हंस,* फरवरी , 1989 सं. राजेन्द्र यादव।
17. *शताब्दों के अन्तिम दौर में एक प्रेम- साक्षात्कार,* अप्रैल - जून , 1989 सं. सोमदत्त।
18. *चिट्ठी- हंस,* अगस्त , 1989 सं. राजेन्द्र यादव।
19. *बायोडाटा- पहल-* 42 अगस्त, 1991 सं. ज्ञान रंजन।
20. *पाताल पहल* 49 मई, 1994 संज्ञान रंजन।
21. *जलडमरूमध्य* - हंस, अगस्त, 1996 सं. राजेन्द्र यादव।
22. *यक्षगान - हंस,* जुलाई 1997 सं. राजेन्द्र यादव ।
23. *ग्रहण- कथादेश,* अगस्त 2001 सं. हरिनारायण ।
24. *वजूद वागर्थ,* फरवरी 2004 सं. रवीन्द्र कालिया ।
25. *शृंखला- नया ज्ञानोदय,* मई, 2011 सं. रवीन्द्र कालिया ।

उपन्यास साहित्य

1. *अन्वेषण-* राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 1992
2. *निर्वासन-* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण, 2014 नारायण

सहायक ग्रंथ सूची

1. अवस्थी, देवीशंकर: *नयी कहानी संदर्भ और प्रकृति,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973
2. इस्लाम , शम्सुल: *भारत में अलगाववाद और धर्म,* वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2002
3. इस्लाम, शम्सुल: *भारत में भूमण्डलीकरण,* वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2007
4. इस्लाम, *शम्सुल: बीच बहस में से सेकुलरवाद,* वाणी प्रकाशन , नई दिल्ली , 2007 12

5 कमल, अरूणः *गोलमेज,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2009

6 कुमार, राजीवः *कथाकार, अखिलेशः, सृजन की परिधि,* साहित्य भंण्डार प्रकाशन इलाहाबाद 2017

7 कुमार, राजीवः *कथाकार, अखिलेशः, सृजन के आयाम,* साहित्य भंण्डार प्रकाशन इलाहाबाद 2017

8 कुमार, विमलः *सत्ता, समाज और बाजार,* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली 2008

9 खेतान, प्रभाः *बाजार के बीच बाजार के खिलाफ,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2007

10 गुप्त, शम्भुः *कहानी की अंदरूनी सतह,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2015

11 गुप्त, शम्भुः *कहानी की यथार्थवाद से मुक्ति,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2016

12 गुप्त, शम्भुः *कहानी की कहानी वस्तु : अन्तर्वस्तु,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2014

13 गौतम, मूलचंदः *समकालीन हिंदी कहानी का सच,* अरु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016

14 जोशी, रामशरणः *आदमी बैल और सपने,* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

15 ज्ञानरंजनः *कबाड़खाना,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

16 तिवारी, अजयः *आलोचना और संस्कृति,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

17 दुबे, अभय कुमार (सम्पादक): *आधुनिकता के आईने में दलित,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

18 नागर, विष्णुः *हमें देखती आँखें,* सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008।

19 पचौरी, सुधीशः *उत्तर आधुनिक मीडिया विमर्श,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

20 पचौरी, सुधीशः *उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

21 पचौरी, सुधीशः *उत्तर यथार्थवाद,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

22 पाण्डेय, मैनेजरः *मै भी मुँह में जबान रखता हूँ,* यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2006

23 प्रकाश, उदयः *अपनी उनकी बात,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

24 प्रकाश, उदयः *ईश्वर की आँख,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

25 प्रकाश, उदयः *नई सदी का पंचतंत्र,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

26 प्रसाद, कमला (सम्पादक): *स्त्री मुक्ति का सपना,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 2007

27 प्रकाश, स्वयंः *और फिर बया अपना,* यश पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009

28 प्रकाश, स्वयंः *दूसरा पहलू,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

29 भारद्वाज भारतः *समकालीन सृजन संदर्भ,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

30 मदान, इन्द्रनाथः *हिन्दी कहानीः एक नयी दृष्टि,* संभावना प्रकाशन, हापुड़, 1978

31 मदान, इन्द्रनाथः *हिन्दी उपन्यासः पहचान और परख,* लिपि प्रकाशन, दिल्ली, 1973

32 मधुरेशः *हिन्दी उपन्यास का विकास,* लोक भारती, इलाहाबाद, 2006

33 मधुरेशः *हिन्दी कहानी का विकास,* सुमित प्रकाशन, इलाहाबाद 1996

34 राजकिशोरः *उदारीकरण की राजनीति,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

35 राय, गोपालः *उपन्यास की संरचना,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

36 राय, गोपालः *हिन्दी कहानी का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2014

37 राय, गोपालः *हिन्दी उपन्यास का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2005

38 सिंह, नामवरः *आधुनिकता साहित्य की प्रवृत्तियाँ,* लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2004

39 सिंह, नामवरः *कहना न होगा,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

40 सिंह, नामवरः *कहानी नयी कहानी,* लोक भारती, इलाहाबाद, 2016

41 सिंह, नामवरः *बात – बात में बात,* वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006

42 सिंह, सुधाः *स्त्री कथा,* ग्रंथ शिल्पी, नई दिल्ली, 2007

कोश ग्रंथ

1 वर्मा, डॉ. धीरेंद्रः *हिंदी साहित्य कोश भाग–एक व दो,* ज्ञानमंडल बनारस, 2015

2 वर्मा रामचंद्रः *बृहत प्रामाणिक हिंदी कोश,* लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, 2006

3 बाहरी, हरदेवः *राज्यपाल हिंदी शब्दकोश भाग–1,* राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट दिल्ली, सोलहवाँ संस्करण, 2002

4 कुमार, अरविन्दः *सहज समांतर कोश,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2006

सहायक पत्र–पत्रिकाएँ

1 अक्सर (त्रैमासिक), संपादक हेतु भारद्वाज, जयपुर।

2 आलोचना (त्रैमासिक), संपादक अरूण कमल, नई दिल्ली।

3 कथादेश (मासिक), संपादक हरिनारायण, नई दिल्ली।

4 तद्भव (त्रैमासिक), संपादक अखिलेश, लखनऊ।

5 पक्षधर, (अर्द्धवार्षिक), संपादक विनोद तिवारी, नई दिल्ली।

6 बहुवचन, (त्रैमासिक पत्रिका) संपादक अशोक मिश्र महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा ।

7 बनास जन (अनियतकालीन), संपादक पल्लव, दिल्ली।

8 रचना समय, (मासिक), संपादक ब्रजनारायण शर्मा, भोपाल ।

9 लमही, (त्रैमासिक), संपादक विजय राज, लखनऊ।

10 वसुधा (त्रैमासिक), संपादक कमला प्रसाद, भोपाल।

11 वागर्थ (मासिक), संपादक विजय बहादुर सिंह, कलकत्ता।

12 संदर्ष, (अनियतकालीन), संपादक सुधीर विद्यार्थी, पीलीभीत।

13 समकालीन जनमत (मासिक), संपादक रामजी राय, इलाहाबाद।

14 समकालीन भारतीय साहित्य (द्वमासिक), संपादक अरूण प्रकाश, नई दिल्ली।

15 समीक्षा, (त्रैमासिक), संपादक सत्यकाम, नई दिल्ली ।

16 समयान्तरण (मासिक), संपादक पंकज बिष्ट, नई दिल्ली।

17 हंस (मासिक), संपादक संजय सहाय, नई दिल्ली।

ऑनलाइन पत्रिकाएँ और वेबसाइट

1 हिंदीनेस्ट. डॉट कॉम (साप्ताहिक) संपादक मनीषा कुलश्रेष्ठ हिन्दीनेस्ट. कॉम (hindinest.com)

2 हिंदी कुंज (साप्ताहिक) संपादक आशुतोष दुबे, हिन्दी कुंज.कॉम (hindikunj.com)

3 शोध संचयन (अर्द्धवार्षिक) संपादक डॉ. योगेंद्र प्रताप सिंह, डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू .

शोध.नेट (www.shodh.net)

4 सृजन गाथा (मासिक) संपादक जय प्रकाश मानस, सृजन गाथा. कॉम (srijangatha.com)

Outline approved

13.07.18

[Dr.(Mrs.) SUMAN PALASIA]

डॉ. सुमन पलासिया
शोध पर्यवेक्षक
हिन्दी विभाग

Name and Signature of Supervisor
with date & seal

13/07/2018

PAVAN KUMAR GARG

Signature of the candidate with date